Chinhari
The Young India

चिन्हारी: द यंग इंडिया

CHINHARI: The Young India

www.chinharitheyoungindia.com

संपादक का नोट: चिन्हारी एक सपना है

चिन्हारी एक सपना है। नए रिश्ते बनाने का सपना - पुरुष और नारी के बीच नया रिश्ता, मनुष्य और पर्यावरण के बीच नया रिश्ता, आदिवासियों के अतीत और वर्त्तमान के बीच नया रिश्ता। चिन्हारी एक सपना है कि युवा घर, खेत और जंगल में श्रम को खूबसूरती से बांटे। पर्यावरण और जंगल की विविधता और उसकी ताल के साथ मनुष्य की ज़िन्दगी को जोड़ने का सपना। जो खेती आदिवासी करते थे और जिस तरह से करते थे उसके बीच एक अहिंसक रिश्ते का सपना। चिन्हारी एक सपना है कि लड़कियां एक दूसरे के साथ अपने ज़िन्दगी में हो रही हिंसा, अपने अनुभव को बांट सकें, और बांट कर अपने जीवन की स्थिति को बदल पाने का सपना। आदिम खेती के साथफिर से रिश्ता बनाने का सपना। बाड़ी, एक सामूहिक रूप से ली गयी ज़मीन, में देसी बीज से धान-सब्ज़ीकी खेती का सपना। खेती और खान-पैन की सूझ-बुझ को एक नयी दिशा देना। आदिवासी जनजीवन (आदिवासी वर्ल्ड-व्यू) के साथ जो रिश्ता छूट गया है उस रिश्ते को फिर से ढूंढने का सपना। जल जंगल जमीन से जो जुड़ाव अब सीमित होने लगा है उसमें फिर से आदिवासी ढोलक की तान ढूंढने का सपना। लिंग, आदिवासियत और पर्यावरण को साथ लाने का सपना।

चिन्हारी की शुरुआत

मनिता ताम्रकार

कक्षा 12
ग्राम –मार्दापोटी

आप सभी को मेरी ओर से नमस्ते ! मेरा नाम मनिता ताम्रकार है और मैं ग्राम मर्दापोटी की निवासी हूँ।मैं आपको पानी के बारे में मेरा अनुभव बताना चाहती हूँ। हमारे गाँव मर्दापोटी में पानी की बहुत बड़ी समस्या है, हमें पीने का पानी लेने के लिए हमारे मोहल्ले से दूसरे मोहल्ले में जाना पड़ता है। इस समस्या को लेकर हमने 2017 में चिन्हारी का काम शुरू किया था। हमने काफी गहराई में जा कर इस समस्या के बारे में समझने की कोशिश की। सोच-विचार और चर्चा के बाद 'पानी की समस्या' हमें 'पानी लानेकी समस्या' लगने लगी। पानी लाने की समस्याके दो पहलू थे: एक, यहकि लड़कियों और महिलाओं को ज़्यादातर पानी लाना पड़ता है इसलिए घर के बाकी सदस्यों को भी घर के काम व पानी लाने की प्रक्रिया में सहायता करनी चाहिए और दो, गांव में एक ही बोर-वेल से अगर घर-घर पानी आने की सुविधा हो गयी तो बाकी के बोर-वेल का इस्तेमाल कम हो जायेगा जिससे गांव में पानी का स्तर शायद बेहतर हो जायेगा। इन बातों को ध्यान में रखते हुए हमने लड़कियों के द्वारा किए गए श्रम के बारे में एक नाटक किया और गांव में घर-घर पानी की सुविधा के लिए गांव वालों को तैयार करने की कोशिश की। हमारे गांव में पानी को ले कर हमने सभी महिलाओं और पुरुषों के साथ 2017 में एक मीटिंग भी किया था। इस मीटिंग में हमने पानी की समस्या के बारे में सभी को बताया और सभी से इस बात पर चर्चा करने की कोशिश की। सभी महिलाएं इस बात से सहमत थी कि गांव में पानी की समस्या है और उन्हें ही पानी के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है। गांव में ग्यारह नल, एक तालाब, एक कुआँ और सात बोर-वेल हैं, मगर गर्मी के दिनों में इतने बोर-वेल होने के कारण बोर-वेलके साथ-साथ पानी के और सभी स्रोतसूख जाते हैं। गर्मी के दिनों में सरकारी बोर-वेल सूख जाते हैं, और सिर्फ निजी बोर-वेल बचते हैं। पानी केकुछ और स्रोत गांव के आस पास भी हैं, जैसे डुबान, स्टॉप-डैम, खेत में लगे निजी बोर-वेल, आदि जहाँ से गांव में पानी नहीं आता। हद से ज़्यादा बोर-वेल होने के कारण गांव में पानी का स्तर कम होता जा रहा है। मेरा डर है कि आने वाली पीढ़ियों को पानी ना मिलने के कारण यह गांव छोड़ना ना पड़ जाए, क्योंकि हमने ज़मीन में छेद कर-कर के पानी निकलना तो सीख लिया है मगर उसे भरना नहीं सीखा। पानी का स्तर

नीचे होने के कारण हर साल बोर-वेल खराब हो जाते हैं, और हम लड़कियों व महिलाओं को इस परेशानी का भार उठाना पड़ता है। हम पीने का पानी दूसरे के घरों सेसिर पर रख कर लाते हैं। महिलाओं और हम लड़कियों की अर्ज़ी थी कि एक टंकी में लगायी पाइप के माध्यम से घर-घर में पानी पहुंचे। इससे गांव में बनाये गए निजी बोर-वेल का भी इस्तेमाल कम होगा। इसे करने में हमने होने वाले खर्च पर भी चर्चा की। अगर हर परिवार अपना श्रम और हज़ार रुपये तक की राशि दान करें तो घर-घर पानी लाना आसान हो सकता है। महिलाओं ने बिना देरी के ही इस बात को मान लिया। मगर श्रम और पैसे की गणना व योगदान से पुरूष सहमत नहीं थे। शायद वे बदलाव के लिए तैयार नहीं थे। महिलाओं ने इस समस्या को ध्यान में रखते हुए एक आवेदन बना कर कलेक्टर जी को दिखाया, जिनकी मदद से गांव में एक टंकी लगी। अब धीरे-धीरे हर मोहल्ले में पाइप बिछाया जा रहा है ताकि हर घर में पानी की समस्या का निवारण हो सके। यह देख सभी को ख़ुशी हुई कि पानी की समस्या धीरे-धीरे बहुत जल्द ठीक हो जाएगी और किसी को पानी के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। यह सब देख कर मुझे जो बात अच्छी लगी वह ये है कि हमारे गांव में कुछ भी हो महिलाएं एकजुट हो कर कोई भी काम कर सकती हैं।

आप लोगों को क्या लगता है? हमारे गांवकी महिलाओं ने जो किया वह सही था या गलत?

मैं आपके जवाब का इंतज़ार करूँगी।

॥धन्यवाद॥

परिशिष्ट भाग: मर्दापोटी में, पानी के लिए मीटिंग चिन्हारीके माध्यम से हुई थी। मनिता के लेख का बहुत ही सुन्दर रूप से लिखा हुआ आखिरी भाग दुर्भाग्य से कभी पूरा हुआ ही नहीं। महिलाएं कभी कलेक्टर के पास नहीं गयी, और जिन 'जन समस्या निवारण शिविरों' में हमने अपनी अर्ज़ी दी थी उन्होंने कभी हमारी बात का कोई जवाब नहीं दिया। मर्दापोटी में पिछले तीन सालों में (जब से पानी को ले कर इस गांव में काम शुरू हुआ है) ना महिलाएं एक जुट हो पायी औरना ही इतनी परेशानी के बाद भी गांव में पानी की समस्या दूर हो पायी। इस गांव में पानी की समस्या सिर्फ पानी होने या ना होने की कहानी नहीं है, बल्कि कहानी इस बात की है कि आखिर पानी कौन लाता है और उनकी बातों को मायने क्यों नहीं दी जाती। इस लेख का अंत शायद मनिता का सपना है, वो सपना जिससे वह ना निकलना चाहती है ना टूटने देना चाहती है। वह हर रोज़ दो-तीन घंटे अपनी पढ़ाई छोड़ कर जब पानी लाती है तो शायद इसी उम्मीद भरे सपने में खोयी रहती है। इसी वजह से हम इस लेख से यह हिस्सा नहीं निकलना चाहते थे, हम मनिता का ये सपना नहीं तोड़ना चाहते थे। हमारे अनुभव में चिन्हारी ऐसी जगह है जहाँ ये लड़कियाँ कभी-कभी इन सपनों के साथ जीती हैं और कभी-कभी इन सपनों को जीती हैं।

सदस्यों का अनुभव

मार्दापोटी में, 2017 में, चिन्हारी का काम शुरू हुआथा। इस काम की नींव 2016 से ही रखनी शुरू कर दी गयी थी। मर्दापोटी में लगातार हमने पानी, श्रम, पोषण, पढ़ाई आदि पर काम किया। डोकाल में चिन्हारी ने श्रम, लिंग पर निर्धारित भेद-भाव, गोंडी सभ्यता,आदि पर काम किया है। 2019 में दोनों गावों में लड़कियों ने एक साथ मिल कर रबी और खरीफ सब्ज़ी की खेती की। हमारे प्रयास में हमें सफलता देर से मिली क्योंकि दोनों ही गांव में हमारी रबीकी फसल ख़राब हो गयी। इसके बावजूद हमने एक बार और प्रयास किया। खरीफ में हमारी फसल अच्छी हुई और हमने दोनों बार के अनुभव से बहुत कुछ सीखा। हम इस खेती में शुद्ध देसी बीज का उपयोग करते हैं और शोध द्वारा प्रमाणित पद्धति से खेती करते हैं। यह पद्धति हमने उड़ीसा में रहने वाले वैज्ञानिक देबोल देब और उनके साथी देबदुलाल जी से सीखा है। इन लोगों तक पहुंचाने में हमारे साथी आशुतोष कुमार और अनूप धर का बहुत बड़ा योगदान है।

हमारी इस पद्धति में किसी प्रकार का रासायनिक पदार्थ इस्तेमाल नहीं होता, और साथ ही हम गांव में आसानी से मिलने वाली चीज़ों का ही प्रयोग करते हैं। हमारा उद्देश्य है कि हम अपने शरीर और इस दुनिया(मिट्टी, धरती, अलग-अलग प्रकार के जीवाणु आदि) से अहिंसक रिश्ता बना सके। इस काम का सबसे बेहतर विवरण चिन्हारी के सदस्य ही दे पाएंगे इसलिए हर प्रकाशन में हम चिन्हारी के सदस्यों का अनुभव ज़रूर प्रकाशित करेंगे। सदस्यों के द्वारा लिखे गए ये लेख एक और चीज़ दर्शाते हैं। सालों से आदिवासी, गाँववासी व गांव के बारे में, उनकी गरीबी, उनकी स्थिति के बारे

में बाहरी दुनिया के लोग लिखते आ रहे हैं। यह पत्रिका लिखित ज्ञान के इस चेहरे को बदलना चाहता है। हमारी कोशिश है कि गांव की इन लड़कियों की बातें, स्थिति और विचार दूर देश तक पहुंचे, ताकि अब वे खुद का प्रतिनिधित्व करें और हम धीरे-धीरे हिरावल (और अग्रगामी) की राजनीति (politics of vanguardism) से बाहर निकल पाए।

केशबाती नेताम

कक्षा 11 (कॉमर्स)
ग्राम – डोकाल

मैं चिन्हारी की एक सदस्य हूँ। चिन्हारी का आशय चिन्ह छोड़ने या याद रखने से है। चिन्हारी लड़कियों का समूह है जहाँ वे एक दूसरे के सामने अपने मन की बातों को रखती हैं और एक दूसरे को समझती हैं। हमारा काम चौतरफ़ा है। हम अपने लिए, एक दूसरे के लिए, गाँव के लिए और समाज के लिए काम करना चाहते हैं। हमारा एक उद्देश्य लिंग भेद को हटाना है। अक्सर, गांव हो या शहर, लड़के और लड़कियों में भेद-भाव किया जाता है। लड़कियों को पैदा होते ही ये सिखाना शुरू कर दिया जाता है कि वे लड़कों से अलग हैं, उन्हें लड़कों से दूर रहना चाहिए, उनसे बात नहीं करनी चाहिए, वह काम करने की ज़िद नहीं करनी चाहिए जो लड़के करते हैं आदि। ये सभी बातें लिंग भेद की ओर इशारा करती हैं कि लड़कियों और लड़कों में कितना फर्क है। ये सारी बातें समझ कर हमने लड़कियों का एक समूह बनाया, जहाँ हम भेदभाव ख़त्म करने के लिए गहराई से काम करते हैं और सभी एक दूसरे का सहयोग करते हैं। हमारी कोशिश है कि यह समूह बहुत आगे तक जाए। अपने समूह को हम आगे बढ़ाने के लिए हमने पोषण पर काम किया। डॉ. अनूप धर के द्वारा की गयी शारीरिक जांच से हमें पता चला कि हमारे समूह की कई लड़कियों में खून की कमी थी। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमने देसी बीज पर चर्चा शुरू किया। सोच-विचार के बाद हमें पता चला कि देसी बीज (हाइब्रिड बीज की तुलना में) में पोषण तत्व ज्यादा होते हैं। इस वजह से हमने देसी बीज को ले कर काम करना शुरू कर दिया। हमारे लिए देसी बीज लगाने का उद्देश्य सिर्फ हमारा पोषण नहीं था। हम अपने इस प्रयोग के माध्यम से गांव और समाज के सभी लोगों को स्वस्थ रहने का लक्ष्य और प्रेरणा देना चाहते हैं। साथ ही हमारी कोशिश है कि सभी मिलकर मिट्टी के स्वास्थ्य के बारे में सोच सके। वह मिट्टी जिसकी हम आदिवासी क्षेत्रों में पूजा करते हैं। जैविक पद्धति से उगाये गए देसी बीज मिट्टी और उसके भीतर रहने वाले जीव - जंतुओं की रक्षा करते हैं। हाइब्रिड बीज के आने और उनके प्रचार प्रसार के कारण देसी बीज विलुप्त हो गए हैं। लोगों ने देसी बीज इस्तेमाल करना बहुत कम कर दिया है। हाइब्रिड बीज के कुपोषित होने के कारण व उसमें डाले जाने वाले रासायनिक पदार्थों से हमारे शरीर में कई प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। किसान अनजाने में पूरी तरह से बाजार पर आश्रित हो गए हैं। हमारी कोशिश है कि किसान बीज के मालिक हों और उन्हें बीज बाजार से खरीदना ना पड़े। औद्योगिक क्रांति ने हमें सुविधा जनक मशीनों के इस्तेमाल और कम समय में ज्यादा मुनाफ़ा प्राप्त करने की दौड़ में लगा दिया है। इस क्रांति से देश एक प्रकार का विकास तो कर रहा है मगर उसके दुष्परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं। रासायनिक दवाइयों से मिट्टी में रहने वाले जीव मर रहे हैं, मिट्टी की दुनिया का संतुलन बिगड़ रहा है, तथा उसकी उपजाऊ शक्ति कम होती जा रही है और फसलों पर भी इसका असर दिख रहा है। हम देसी बीज को प्रोत्साहन देना चाहते हैं ताकि मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बनी रहे और फसल अच्छे से उपज पाए।

जिस समय हमने देसी बीज उगाने के बारे में सोचा उस वक़्त हमें उन्हें उगाने की प्रक्रिया नहीं पता थी। पहली बार, मार्च 2019 में हमने, बिना सही पद्धति जाने ही बीजों को अपनी बाड़ी में लगाया। बीज पौधों में परिवर्तित हो गए थे और कुछ ही दिनों में उनमें फूल आने वाले थे लेकिन हमारे गांव डोकाल में बर्फ की बारिश हो गयी। इस वजह से हमारी सारी सब्ज़ियां ख़राब हो गयी। हिम्मत ना हारते हुए हमने खरीफ 2019 में फिर से कोशिश की। इस बार हम देसी बीज को सही पद्धति से लगाना चाहते थे। इसी ज्ञान को सीखने के लिए हम उड़ीसा में रहने वाले वैज्ञानिक डॉ. देबोल देब के प्रयोगात्मक खेत (http://cintdis.org/basudha/) में गए। यह खेत और उनका घर नियम गिरि की चट्टानों के बीच में था। वहां रहने वाले उनके साथ दुलाल जी, महेंद्र जी और सविता जी ने स्वादिष्ट खाने के साथ हमारा स्वागत किया। इस खेत में केवल देसी बीज ही लगाए जाते हैं। वे बीज को परीक्षित पद्धति से लगाते हैं जिससे उनके पौधों में ज्यादा कीड़े नहीं लगते। उन्होंने हमें बीज के बारे में और बीज लगाने के बारे में कई बातें बताई। वहां

सिखाई गयी बातों को हमने वापस आकर सभी के साथ चर्चा में रखा। उनकी पद्यतियों को अपनाते हुए हमने अपनी बाड़ी में सब्ज़ियां लगायी।

हमारी बाड़ी खुली जगह में है जहाँ कोई भी जानवर आसानी से घुस सकता है। जानवरों से बाड़ी को बचाने के लिए हम सभी लड़कियों ने मिल कर बाड़ी को घेरा। हम सभी हर दिन स्कूल जाने से पहले एक घंटा बाड़ी में सफाई और मिट्टी हल्का करने का काम करती थी। दस दिन तक लगातार हम सुबह सुबह कुदाली और फावड़ा ले कर काम करने पहुंच जाया करते थे। धीरे धीरे बाड़ी के तैयार हो जाने के बाद हमने बीज लगाना शुरू किया। बीज लगाने के बाद भी हम उनकी देखभाल करते रहे। प्राकृतिक रूप से पानी न गिरने पर हम सभी मिल कर बाड़ी में पानी डाला करते थे। पौधों को शत्रु कीट से बचाने के लिए हमने बहुत ही आसानी से बन जाने वाली जैविक दवाइयाँ डाली। अब सभी सब्ज़ियाँ फूल और फल दे रही हैं। हम सभी मिल कर बाड़ी में काम करते हैं और सब्जियों को बाँटते हैं।

हमारी संख्या ज्यादा होने के कारण कभी-कभी हमारे बीच में छोटे-मोटे झगडे हो जाते हैं, मगर हम लोग फिर मिल भी जाते हैं। बाड़ी के अलावा हमलोग खेल भी खेलते हैं, गाने गाते हैं, नाटक करते हैं और बहुत मस्ती भी करते हैं। जब हम सभी साथ में रहते हैं मुझे बहुत अच्छा लगता है। हमारा समूह अटपटा सा है। इसमें हमलोग कभी हँसते हैं तो कभी मिलकर रोते हैं, इस कारण यह समूह रोचकदार है। कोई भी हम लोगो के समूह में जुड़ सकता है, हमारे साथ बातें कर सकता है और हमारे साथ काम भी कर सकता है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे काम को पढ़ने वाले सभी लोगो को हम धन्यवाद करते हैं और हमारे काम में किसी भी प्रकार से हमारा सहयोग करने के लिए आमंत्रित करते हैं। आप हमारी बौद्धिक, आर्थिक, श्रम आधारित किसी भी तरह से मदद कर सकते हैं, आप हमें याद कर के या हमारे लिए प्रार्थना कर के भी हमारा सहयोग कर सकते हैं। हम आपकी हर कोशिश के लिए आपका धन्यवाद करते हैं।

वोमेश्वरी सूर्यवंशी

कक्षा 10
ग्राम – डोकाल

अगस्त 2018 से हमने मीटिंग में बाड़ी (सब्ज़ी की खेती करने के लिए छोटी सी जगह) के बारे में बातचीत करना शुरू किया। हमने गांव में फारेस्ट डिपार्टमेंट से चलने वाले नर्सरी से जगह की मांग भी की। हम वह जगह देखने भी गए थे, मगर वह ज़मीन हमें नहीं मिल पायी। जमीन की मांग करने में गांव की महिलाओं (सत्तू दीदी, अमेनिका दीदी, कुंती दीदी आदि) ने हमारा बहुत साथ दिया। उनकी मेहनत की वजह से हमें फरवरी 2019 में स्कूल के पीछे की ज़मीन मिली। ज़मीन मिलने के बाद हम सब लड़कियों ने गांव की महिलाओं के साथ उस जगह की साफ़-सफाई शुरू कर दी। हम लोगों ने मेड़ बनाना सीखा, पानी के लिए रास्ता बनाना सीखा, बीज लगाना सीखा आदि। बीज लगाने के बाद हम लोग बाड़ी में पानी डालने जाते थे। हमारे हाथों से बोये गए बीज धीरे-धीरे पौधों के रूप में निकल रहे थे, मगर कर्रा (बर्फ के ओले) पानी के गिरने से भाजी-साग सब ख़राब हो गए।

अप्रैल 2019 में केशवती और ललिता दीदी का नाम उड़ीसा जाने के लिए दिया गया, जहाँ ये लोग सब्जी की खेती व खेती के बारे में वैज्ञानिक डॉ. देबोल देब के खेत, "बसुधा" में सीखने गए। वहां देबोल जी के साथी देब दुलाल भट्टाचार्य ने उनकी मदद की और खेती के बारे में कई चीज़ें सिखाईं। वहां ये लोग "एका नारी संगठन" से भी मिले और खेती के बारे में चर्चा किया। वे उन लोगों के साथ नाचे भी। वापस आने के बाद चिन्हारी की मीटिंग में वहां सिखाई गयी सभी बातों को उन्होंने दोहराया, फिर हम सब ने भी फ़ैसला किया कि ऐसे बीज लगाएंगे। इसी दौरान हमने पीपल पेड़ की टहनियों को छंटवाया क्योंकि पीपल के पत्ते जल्दी और ठीक तरह से मिट्टी में मिल नहीं पाते। 2019 के खरीफ फसल के समय हमने फिर से बाड़ी की ज़मीन को साफ किया। हमने दो-तीन दिन तक मेड़ या सब्ज़ी लगाने के लिए डब्बे बनाने का काम किया। आखिर में हमने बीज लगाया और वापस घर चले गए।

नेहा मंडावी

कक्षा 8
ग्राम – डोकाल

हम लोग बाड़ी में काम करते हैं। हमारी बाड़ी छोटी सी है। वहां हम लोग देसी सब्ज़ियाँ लगाते हैं। हम लोग इस काम को आगे बढ़ाना चाहते हैं। इसे आगे बढ़ाने के लिए पहले हमें मज़बूत रहना है तभी हम इस काम को आगे बढ़ा सकते हैं। हमारे ग्रुप का नाम 'चिन्हारी: द यंग इंडिया' (https://www.chinharitheyoungindia.com/2019/03/chinhari.html) है। चिन्हारी के बारे में बताने के लिए हमारे ग्रुप की एक लड़की उड़ीसा गयी थी। उन्होंने वहां हमारे काम के बारे में प्रेजेंटेशन दिया। हम इस काम को अपने क्षेत्र की लड़कियों के बीच विख्यात करना चाहते हैं ताकि वे भी इसका महत्व समझ सके और हमारा साथ दे सके। मगर सबसे पहले हम अपने बाड़ी में किये जाने वाले सभी काम को अच्छी तरह सीख और समझ रहे हैं। ऐसा करने से हम भविष्य में चिन्हारी से जुड़ने वाली सभी लड़कियों को जैविक रूप से होने वाले देसी बीज की खेती के बारे में विस्तार से बता पाएंगे। हम लोगों ने यह भी सोचा है कि हम बाड़ी के अलावा कुछ और भी काम करेंगे, जिस पर हम लगातार चर्चा कर रहे हैं। हमारे हर कार्य के पीछे कुछ कारण होता है। चिन्हारी की सभी लड़कियाँ चेक-अप के लिए धमतरी गए थे तो अधिकांश लड़कियों में खून की कमी पायी गयी। तब हम सब ने खेती करने का फ़ैसला लिया, देसी बीज के लिए बात किया और बाड़ी में काम करना शुरू कर दिया। चिन्हारी अब देसी सब्जियां उगा रहे हैं ताकि चिन्हारी की लड़कियों को पोषण की कमी ना हो। अगर किसी को ये काम अच्छा लगे ,पसंद आये तो वो हमारी मदद कर सकते है। आशा है कि आने वाले समय में जैसे-जैसे हमारा काम आगे बढ़ेगा, इस क्षेत्र व इस देश में किसी को पोषण की कमी ना होगी ।

सत्यभामा सूर्यवंशी

कक्षा 5
डोकाल

सबसे पहले रिम्मी दीदी (जो झारखण्ड से हैं) हमारे गांव में आयी। उन्होंने गांव की महिलाओं के साथ बैठना शुरू किया। उन्होंने महिलाओं के समूह को लेकर चर्चा किया। धीरे-धीरे गांव की लड़कियों के साथ मिलना-जुलना शुरू हुआ। रिम्मी दीदी के साथ बातचीत करना, मिलजुलके रहना बहुत अच्छा लगता था। उसके बाद रिम्मी दीदी हम सभी लड़कियों को ट्यूशन पढ़ाने लगी। स्वर्णिमा दीदी (जो मर्दापोटी में रहती थी) ने बोला कि हम सभी लड़कियों का समूह बनाए. हमने सभी लड़कियों के साथ मिलकर एक समूह बनाया, जिसका नाम 'चिन्हारी' है। चिन्हारी की सभी लड़कियों ने मीटिंग करना शुरू किया।

जब हम मीटिंग करने लगे तो मीटिंग में माहवारी को लेकर चर्चा किया कि माहवारी के समय लड़कियों को रुमाल कितने बार बदलना चाहिए और माहवारी के समय अपने शरीर का ध्यान रखना चाहिए आदि। कुछ दिन बाद मर्दापोटी और डोकल में रहने वाले चिन्हारी के सभी सदस्य धमतरी गए थे।

पूनम ताम्रकार

कक्षा 10
ग्राम – मार्दापोटी

जब हमने सब्जी लगाने के बारे में सोचा तो हमने सबसे पहले ज़मीन खोजने की कोशिश की। सुनौती बाई के खाली घर की बाड़ी में हमें सब्जी लगाने की अनुमति मिली। ज़मीन मिलने के बाद हमने वहां की साफ़ सफाई की, ज़मीन को मिल कर खोदा, और मेड़ बनाये। ज़मीन तैयार करने के बाद हमने उसमें बीज डाल कर गोबर खत्तु (खाद द्) और पानी डाला। एक हफ्ते में हमें छोटे-छोटे पौधे दिखाई देने लगे। जब हमने उन छोटे-छोटे पौधों को देखा तो हमें बहुत खुशी हुई। हम रोज़ उन पौधों को

पानी देने के लिए जाया करते थे। हमने लोगों के हर दिन के हिसाब से पानी देने की बारी भी लगायी थी। मगर हमारी परीक्षा के दौरान हमलोग पौधों में पानी नहीं डाल पाए, जिससे कई पौधे सूख गए और मरने लगे। परीक्षा के बाद भी गांव में पानी की समस्या होने के कारण हम पौधों में पानी नहीं डाल पाए। आस-पास की टंकियाँ सूख गयी थी और पीने व नहाने के लिए भी पानी नहीं था तो हम सब्जी में डालने के लिए पानी कैसे ले जाते। हमने कुछ बीज खेत में भी लगाया था मगर उन्हें गायें चर गयी। दुर्भाग्यवश दोनों ही जगह हमारी फसल को काफी नुकसान पहुंचा, जिसकी वजह से हम लगाए जाने वाले देसी बीज को बचा भी नहीं पाए।

सुनीता यादव

कक्षा 11
ग्राम – मार्दापोटी

सब्जी उगाने का हमें कुछ अनुभव नहीं था। मार्च2019 में हमने थोड़ा-थोड़ा सब्ज़ी उगाने के बारे में सीखा। जब हमने सब्ज़ी उगाने का सोचा तो हमें ऐसी भी सब्ज़ियों के बारे में पता चला जिसके बारे में हमने पहले नहीं सुना था। हमने कई प्रकार की सब्ज़ियां एक खाली घर के छोटे से बाड़ी में लगाया। हमने जगह की सफाई की, बीज लगाए और उन्हें बड़ा होते देखा। हमने सब्ज़ियों की देखभाल भी की। जब सब्ज़ियां बड़ी होने लगी तो हम उन्हें घर भी ले कर आए और पका कर खाया। लोगों को भी हमारा ये काम अच्छा लगा कि हम कुछ अच्छा सीख रहे हैं। मार्च 2019(रबी के समय) में जब हमने सब्जियां उगाई तब गांव में पानी ना होने के कारण हम सब्जियों में पानी नहीं डाल पाए। लेकिन हम अगली बार और मेहनत करेंगे और सब्ज़ियां उगाएंगे। हम इस काम को अच्छे से करेंगे और आगे बढ़ाएंगे।

चिन्हारी का सामाजिक सभ्यता से जुड़ाव

गोंड शादी की रस्में धमतरी, छत्तीसगढ़

हेमा मंडावी

कक्षा 12
ग्राम – मार्दापोटी

लड़के की शादी की उम्र होने पर घर वाले उसे शादी करने के लिए कहते हैं। माँ लड़के से अनुरोध करती है की उसकी उम्र को देखते हुए लड़का बहू घर ले आये। जब लड़का शादी के लिए मान जाता है, परिवार वाले गांव के सियान (बुज़ुर्गों) की मदद ले कर लड़की खोजने की कोशिश करते हैं। वे अपने सगे-सम्बन्धियों के माध्यम से दूर-दूर तक अपने लड़के के लिए लड़की का पता लगाते हैं। किसी अच्छे परिवार के मिलने पर निश्चित रूप से उनके वंश और गोत्र के बारे में पूछा जाता है। इस प्रकार की सभी जानकारी पाने के बाद लड़के वाले अपने आने की सूचना लड़की के परिवार तक पहुंचाते हैं। तय किये दिन पर लड़के वाले अपने गांव के सियान के साथ लड़की के परिवार से मिलने जाते हैं। दोनों परिवार वाले लड़के और लड़की से उनकीपढ़ाई और काम के बारे में बात करते हैं। इस मुलाक़ात में लड़की और लड़के की सहमति बहुत ज़रूरी होती है। दोनों की सहमति के बाद ही रिश्ता तय किया जाता है। दोनों परिवार कीख़ुशी होने पर लड़के और लड़की की राशि देख कर फलदान (सगाई) का दिन तय किया जाता है।फलदान का निमंत्रण सभी सगे-सम्बन्धियों के घर जाकर या फ़ोन से दिया जाता है। फलदान के कुछ दिन पहले से ही सगे-सम्बन्धी घर आना शुरू कर देते हैं। यह रस्म अदायगी लड़की के घर पर होती है, इसकी तैयारी के लिए गांव के लोग भी मदद करते हैं।इस दिन घर की साफ़-सफाई और लिपाई-पोताई की जाती है।

फलदान की रस्में: फलदान के दिन लड़के के तरफ से लड़की के लिए श्रृंगार का सामान लाया जाता है। लड़की फलदान की पूजा के लिए उसी श्रृंगार के सामान का इस्तेमाल कर तैयार होती है। इस पूजा में लड़की और लड़का एक दूसरे को फूलों से बनी माला और अंगूठी पहनाते हैं। जैसे-जैसे पूजा आगे बढ़ती है, अलग-अलग रस्मों को निभाया जाता है। लड़का-लड़की को मंगलसूत्र पहनाता है जिसके बाद लड़की उसके पैर छूती है। आख़िरी रस्म समधी-मिलन की होती है। लड़का, लड़की और उनके दोस्त (लोकड़ाहीन व् लोकड़ाहा) सभी बड़ों से आशीर्वाद लेते हैं। लड़की वाले निवेदन करते हैं कि उनकी बेटी का अच्छे से ख्याल रखा जाए और इस दौरान कोई भूल-चूक हुई तो उन्हें माफ़ किया जाये। आखिर में सभी साथ में 'जय बूढ़ादेव' कह कर अपने परम देव का आशीर्वाद लेते हैं और खाने के लिए बैठते हैं। फलदान के पश्चात शादी का शुभ मुहूर्त निकलवाया जाता है।

शादी की तैयारियां:शादी के दो दिन पहले लड़के के घर में 'खरही पोती' नामक रस्म करते हैं। इस रस्म को पूरा करने के लिए लड़की के पिता और गांव के कुछ सियान के साथ लड़के के घर जाते हैं। इस रस्म के लिये दाल, चावल और झाड़ु की ज़रूरत होती है। दाल और चावल के दो - दों दानों को पानी में डाला जाता है। पानी में तैरते दाल और चावल के दाने जब संपर्क में आते हैं तो उसे 'लगीन पोती' (या खरही पोती) की रस्म कहते हैं। अंत में दोनों परिवार भोजन करते है और लड़की वाले वापस अपने गांव चले जाते हैं।

शादी के दिन की रस्में:शादी के दिन गांव के लोग लड़की के घर 'डारा डालने' जाते हैं। इस रस्म के माध्यम से शादी के घर की पहचान होती है। लोगों के आगमन को सराहा जाता है और उन्हें चाय पानी दिया जाता है। डारा डालने की रस्म के मुताबिक गांव के लोग चिरईजाम या अमरुद की डाल घर में लाते हैं। जिसके बाद वे डाल में प्याज़, मिर्च, उपला और पेरा (पुआल) मिला कर दरवाज़े के पास या छत पर डालतेया गाड़ते हैं। ऐसी ही एक पोटली मड़वे (मंडप) के पास भी रखी जाती है। शाम के वक़्त सभी लोग बाजे-गाजे के साथ पूजा करते हुए 'चुलमाटी' लाने जाते हैं। गांव के एक धार्मिक स्थल से मिट्टी लायी जाती है। इसी मिट्टी से घर के आँगन में लकड़ियों के मड़वे को को गाड़ा और सजाया जाता है। गोंड प्रथा को ध्यान में रखते हुए मंगलवार और शनिवार को 'चुल माटी' की रस्म नहीं करते हैं।

शादी के घर में खाना बनाने के लिए समाज और गांव के लोगों से काफी मदद मिलती हैं। समाज या गांव के स्तर पर समूह में लोगों की पारी बाँधी जाती है। लोग बारी-बारी से अपना काम करते हैं, जिसकी वजह से शादी के घर में हमेशा खाना मिलता है। सबसे पहले घर की बाड़ी में बड़े-बड़े चार चुल्हे बनते हैं। चूल्हे के बन जाने पर उसकी पूजा की जाती हैं। पूजा खत्म होने के बाद ही खाना बनाने की प्रक्रिया शुरू होती है।

शाम के वक्त, गांव के सभी लोग लड़के या लड़की को देखने आते हैं। रात को लड़के और लड़की पर तेल और हल्दी चढ़ाना शुरू किया जाता है। लड़की के बुआ और फूफा डेढ़ा-डेढ़ीन बनते हैं। डेढ़ा-डेढ़ीन ही शादी की सभी रस्में करते हैं। वे मड़वे के चारो तरफ घूमते हैं और वहीँ बैठते हैं। इसके बाद लड़की आती है और उनकी गोद में बैठती है। मड़वे में रखी एक बड़ी सी लकड़ी के ऊपर तीन जगह चावल डाला जाता है, और उसी लकड़ी पर लड़की को बैठाया जाता है। सबसे पहले डेढ़ा-डेढ़ीन लड़की को तेल-हल्दी लगाते हैं और मड़वे पर भी चढ़ाते हैं। इस प्रक्रिया को चार बार दोहराया जाता है। इसके बाद ही सारे सगे-सम्बन्धी और गांव के लोग इस रस्म को करते हैं। तेल चढ़ाने की रस्म बाजे गाजे के साथ होती है। रात भर तेल चढ़ाने के साथ ही गांव के लोग मड़वे के आस-पास नाचते हैं। अगले दिन सुबह हर घर से कुछ लोग थाली में दाल, चावल, आलू, प्याज़ सजा कर लाते हैं। घर-घर से आये लोग तेल हल्दी तीन बार उतार कर इस रस्म को पूरा करते हैं। यह समय मौज और मस्ती से भरा होता है, जिसमें गांव के सभी लोग (बच्चों से ले कर बूढ़े) शामिल होते हैं। लोग एक दूसरे को हल्दी और रंग लगाते हैं। होली जैसा जश्न और माहौल बन जाता है। तपती गर्मी होने के कारण लोग एक दूसरे पर पानी में रंग मिला कर भी डालते हैं। यह रस्म दोपहर तक चलती हैजो लड़की के नहाने के बाद खत्म होती है। लड़की को सभी मिलकर एक पर्रे (बांस की टोकरी) में उठाते हैं और ऊपर से पानी डालते हैं। इसके बाद लड़की कपडे बदल कर अपने दोस्तों के साथ खाने के लिए बैठती है। लड़के के घर भी सभी रस्में इसी प्रकार निभाई जाती हैं। नहाने के दौरान लड़की को किसी भी साबुन का इस्तेमाल करना मना होता है। धीरे-धीरे सभी सराती तैयार होते हैं। शाम तक दुल्हन को सजा कर तैयार रखा जाता है। शाम तक दूल्हे के घर से बारात भी आ जाती है। बारात के गांव पहुंचने

पर उनका स्वागत किया जाता है। उनके लिए चाय नाश्ते की तैयारी की जाती है। दूल्हे के लिए उसकी सालियाँ (दुल्हन की दोस्त व बहनें) लाल भाजी, तेल, कंघी और दर्पण ले जाती हैं। इस रस्म को लाल भाजी रस्म कहा जाता है, जिसमे सालियाँ दूल्हे को तैयार करके दुल्हन के घर ले जाती है। दूल्हे को उनकी सालियाँ दर्पण दिखाती हैं और सात बार लाल भाजी खिलाती हैं। पारम्परिक रूप से इस रस्म के बाद सालियाँ दूल्हे की गोद में बैठती हैं जब तक इस रस्म के लिए उन्हें नेग नहीं मिलता।

कुछ वक्त के बाद सराती बाजे-गाजे के साथ बारातियों को लाने जाते हैं। दूल्हा जब लड़की के दरवाज़े पर पहुँचता है तब लड़की भी घर से निकल कर बाहर आती है। दुल्हन दूल्हे की आरती उतारती है और तिलक करती है। रस्म के अनुसार दूल्हा छत पर रखे पर्रे को तीन या सात बार मारता है। घर के दरवाज़े पर जयमाला की रस्म जाती है। इसके बाद दुल्हन दूल्हे का हाथ पकड़ कर घर के अंदर ले जाती है। दूल्हा-दुल्हन को जयमाला के बाद एक कमरे में बैठाया जाता है, और दूल्हे के तरफ से लाये गए श्रृंगार के सामान को दुल्हन को दिया जाता है। दूल्हे के घर से आये सभी श्रृंगार के सामान से दुल्हन फिर से सजती है।

दुल्हन जब सज कर बाहर आती है तब दूल्हा-दुल्हन को मड़वा पर लेकर जाया जाता है। सबसे पहले मौर (बॉस का बना मुकुट) सौंपने की रस्म की जाती है। मौर की रस्म में दूल्हा-दुल्हन अपने-अपने हाथों में चावल और दिया पकड़ते है, जिसके बाद दोनों के सर पर मौर बांधा जाता है। दूल्हे के परिवार से कोई भी पुरुष सदस्य और दुल्हन के परिवार से कोई पुरुष सदस्य के द्वारा दोनों को गोद में उठाया जाता है। दूल्हा-दुल्हन एक-दूसरे को चावल से मारते हैं। इस रस्म के बाद गांठ-बंधन की रस्म की जाती है। गांठ-बंधन के समय दोनों को एक-एक पर्रे (बांस की बनी टोकरी) में, सात कदम की दुरी पर खड़ा कराया जाता है। दोनों के कंधे पे रखी धोती और साड़ी में हल्दी, चावल और एक रूपये के सिक्के को सात गाँठ दे कर बाँधा जाता है। दोनों मिलकर सात कदम चलते है, फिर उन्हें एक ही पर्रे में खड़ा कराया जाता है। गांठ-बंधन के बाद दूल्हा-दुल्हन मड़वे के चारो तरफ सात फेरे लेते हैं।

शादी के रस्मों के बाद टिकावन की रस्म शुरू होती है। टिकावन वह रस्म होती है जिसमें दूर दूर से आये सगे-सम्बन्धी नए जोड़े को हल्दी से रंगे चावल से तिलक (टिकना) करते हैं। तिलक लगा कर वे अपनी इच्छा से नए जोड़े के लिए नेग स्वरुप कुछ पैसे देते हैं। तिलक और नेग दोनों ही रिश्तेदारों का आशीर्वाद माना जाता है। समय के साथ गोंड शादियों का स्वरुप बदल रहा है। पहले नए जोड़े को मड़वे में ही टिकावन के लिए बैठाया जाता था। अब ज्यादातर परिवारों में टिकावन के लिए लकड़ी का मंच बनवाया जाता है। इस मंच को फूल, झालर आदि से सजाया जाता है। मंच के एक ओर डी. जे. (संगीत सयंत्र) की व्यवस्था की जाती है। यह व्यवस्था बच्चों ओर युवाओं के लिए आकर्षण का केंद्र होता है। मंच पर नए जोड़े के लिए राजा-महाराजा वाली कुर्सी भी लगायी जाती है। नए जोड़े के इन कुर्सियों पर बैठने के बाद ही टिकावन की रस्म शुरू की जाती है। कुर्सियों के बगल में दूल्हा और दुल्हन का साथ देने और उनका ध्यान रखने के लिए लोकड़ाहिन और लोकड़ाहा बैठते हैं। साथ ही मंच के नीचे नेग की राशि और उपहार जमा करने के लिए व्यवस्था की जाती है।

टिकावन की रस्म खत्म करके सभी खाने के लिए प्रस्थान करते है। खाने की जगह पर चटाई बिछी होती है, जहाँ अतिथिगण पंक्ति में बैठते हैं । खाना बाँटने का काम अधिकतर छोटे बच्चे और युवा लड़के करते है। यहाँ की शादियों में खाना तीन भाग में परोसा जाता है। सबसे पहले बड़ा, पुड़ी, खीर और लड्डू परोसा जाता है, इसके बाद चावल, दाल, दो-तीन प्रकार की सब्जियां और सलाद परोसा जाता है। आखिर में खाना एक बार फिर परोसा जाता है जिसे 'दूसरिया' भी कहते हैं। खाने के बाद सभी अतिथि वापस अपने घर चले जाते हैं। शादी ख़त्म होने के बाद दूल्हे और दुल्हन को कमरे में बैठाया जाता है। दोनों परिवार मिलकर नेग के सामन और राशि को गिनते है। नेग का सामान दुल्हा-दुल्हन को दिया जाता है और शादी के दिन मिली नेग की राशि लड़की के परिवार को मिलती है।

विदाई के वक़्त दूल्हा-दुल्हन को फिर से मौर सौंपा जाता है। मौर सौपाई में दिये के तेल को हाथों में मल कर घर के बड़े दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद देते हैं। दुल्हन घर से निकलते समय हाथ में चावल लेकर पीछे की तरफ फेंकती है और दुल्हन की माँ अपने आँचल में उस चावल को इकट्ठा करते हुए चलती है। गाड़ी में बैठने से पहले

हेमा मंडावी का लिखा गया यह लेख (आर्टिकल) इंडिजेनस पीपल'स सोसाइटी के द्वारा अंतराष्ट्रीय आदिवासी दिवस के लिए छापी गयी पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। हम कोशिश करते हैं की इस क्षेत्र के लड़के और लड़किया अपनी बातों को लेख के माधयम से दुनिया के सामने ला पाए ।

दुल्हन का भाई, दुल्हन को गुड़ खिलाता है, सात बार उसके चारो तरफ घूमकर उसे पानी पिलाता है। दुल्हन के साथ घर के कुछ लोग और गांव की कुछ लड़कियां जाती हैं। दूल्हा-दुल्हन और उनके साथ आए लोगों को, लड़के के गांव पहुंचने पर, किसी जानकार या रिश्तेदार के घर रखा जाता है। रात भर सभी लोग इसी घर में रुकते हैं। सुबह सभी के तैयार होने और नाश्ता करने के बाद दूल्हे के परिवार के लोग बाजे-गाजे के साथ सभी लोगों को लेने आते हैं। इस दिन दूल्हा-दुल्हन उपवास रखते हैं। घर के दरवाज़े पर परिवार के लोग दूल्हा-दुल्हन के पैरों पर पानी डालते हैं और आरती करते हैं। इस रस्म को पूरा कर दूल्हा-दुल्हन को घर के अंदर मड़वे के पास लाया जाता है। मड़वे पे नए जोड़े को बैठा कर परिवार वाले उन्हें मौर सौंपते हैं। यह रीति बड़े धूम-धाम और बाजे-गाजे के साथ मनाई जाती है, जिसके बाद दूल्हा-दुल्हन आराम करते हैं। शाम को दुल्हन के गांव से अतिथि आते हैं, इस प्रथा को चौहथिया कहते हैं। दुल्हन के सगे-सम्बन्धियों को भी किसी जानकार के घर रुकवाया जाता है और थोड़ी देर आराम करने के बाद दूल्हे के परिवार वाले उन्हें बाजे के साथ परघाने (आदर पूर्वक लेने) जाते हैं।

इसी दौरान दूल्हा-दुल्हन को टिकावन के लिए तैयार किया जाता है और मंच या मड़वे पर बैठाया जाता है। टिकावन के बाद सबसे पहले चौहथिया आये अतिथियों को खिलाया जाता है। सभी के खाने के बाद गठबंधन खोलने की रस्म होती है जिसे दूल्हे के बहनोई (बहन के पति) करते हैं। इस रस्म के लिए दूल्हे के भाई उन्हें नेग देते हैं। गठबंधन खुलने के बाद दूल्हा और दुल्हन खाना खाते हैं। अंत में बेटी और दामाद को खिला कर और उन्हें आशीर्वाद दे कर लड़की के परिवार वाले विदा लेते हैं।

देश-विदेश में चिन्हारी को प्रेरणा देने काम

एका नारी संगठन, रायगड़ा, ओडिशा

आशुतोष कुमार
Centre for
Development Practice

गाँधी एक ऐसे समाज की परिकल्पना करते थे जहाँ समाज का सब से निचला वर्ग भी खुशहाल हो और उसे न्याय और समता मिले। अगर संक्षिप्त में कहें तो इसे ही वे स्वराज कहते थे। मेरा काम भी इसी स्वराज के निर्माण को समर्पित है। पिछले तीन वर्षों से मैं एका नारी संगठन, रायगडा, ओडिशा, के साथ इसी सपने को ले के जुड़ा हुआ हूँ। मेरा काम इन एका महिलाओं के साथ, जो की कोंध समाज से आती हैं, मिल के एक ऐसी खेती की परिकल्पना है जो अहिंसक हो, ना केवल मनुष्यों के लिए अपितु मिट्टी के लिए भी, उसमें रहने वाले कीटों के लिए और वे हर जीव जो प्रकृति का अभिन्न अंग है।

लेकिन एक प्रश्न तो ये भी है कि क्या कोंध आदिवासी समाज की कोई समझ भी है खेती को लेकर? कोंध आदिवासी समाज नजाने कितने ही पूर्व काल से अपने खेती का एक नजरिया बनाते आए हैं जो कि इनके रहन सहन का एक अभिन्न अंग है. इनके लिए प्रकृति एक मित्र समान है न की शत्रु जिस पर विजय प्राप्त करने की आवश्यकता हो। अपना बीज, अपनी खेती का तरीका, प्रकृति का सहयोग मिलके बनता है कोंध आदिवसी की खेती और जीवन का आधार। अगर अहिंसा की बात कोंध समाज के सन्दर्भ में कही जाए तो इनका जीवन शायद सबसे अधिक अहिंसक है।

तत्कालीन सामाजिक सन्दर्भ में एक ही बात कहना चाहूँगा और वह यह है कि विकास के जुनून ने कहीं न कहीं इस समाज को भी अपने कुंडली में जकड़ लिया है और अपनी पकड़ मजबूत करता जा रहा है। इसका सबसे प्रत्यक्ष प्रमाण कोंध समझ की बदलती कृषि पद्धति है। रायगड़ा में हर साल हजारों एकड़ ज़मीन कपास के उपज में व्यय हो रहा है. हर साल हजारों एकड़ ज़मीन से परंपरागत खेती ख़त्म हो रही है और साथ में ख़त्म हो रहे हैं इनके वो बीज जो इनके खाद्य सुरक्षा का मूल आधार रहा है।

विकास का सपना, एक अहिंसक समाज जो अपने जीवन का आधार प्रकृति को मानता है, उसे हिंसा की राह पर तेजी से गतिमान कर रहा है. आज का कोंध अपने ज़मीन में ज़हर डालने से पहले संकोच नहीं करता। आज उससे पैसों के लिए जंगल से पेड़ काटने में दुःख नहीं होता। ये बदलाव सिर्फ प्रकृति के प्रति नहीं है अपितु ये तो मानव का मानव के प्रति भी है। सर्प को ह्रदय से लगाने से चन्दन की ठंडक नहीं मिल सकती। उसी प्रकार विकास, जिसके प्रति एक गहरी चिंता न की गई हो, तो वह उस पागल घोड़े के समान ही है जिसकी न तो हम गति पर लगाम लगा सकते हैं और न ही उसकी दिशा निर्धारित कर सकते हैं, और मजे की बात ये

है की आज कोंध समाज भी इसी पागल घोड़े का सवार हो चुका है और ये बेलगाम घोड़ा तेजी से खाई की तरफ बढ़ रहा है।

एका नारी संगठन और मेरे काम का एक संधर्भ यह है कि खेती के माध्यम से कैसे हम खुद को और समय से साथ दूसरों को इस विकास का सही चेहरा दिखा पाए. इसके लिए हम यथा संभव प्रयास कर रहे हैं कि हम कोंध अतीत से सीख के आज को बदलें। ये ऐसा है जैसे हमारा बीता हुआ कल एक औजार बॉक्स है जिसमें हथौड़ी, पाना, छेनी इत्यादि रखा हो और जिस प्रकार की जरूरत हो वहां से वो औजार लेकर हम अपनी समस्या दूर कर ले। लेकिन इस औजार बॉक्स को तलाशना एक अहम् जरूरत है और उसके इस्तेमाल का भी।

'द यंग इंडिया' की विचारधारा

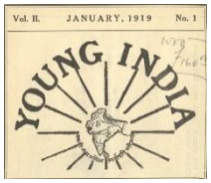

अनूप धर

अंबेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली

इस न्यूज़लेटर या पत्रिका का नाम 'चिन्हारी: द यंग इंडिया' दिया गया है। ये नाम 'द यंग इंडिया' गाँधी जी के द्वारा लिखी गयी पत्रिका का भी हुआ करता था, जो 1919 से ले कर 1931 तक छापी गयी थी। यह पत्रिका गाँधी जी की विचारधाराओं से प्रेरित था।

इस पत्रिका के माध्यम से गाँधी जी भारत के नौजवानों को अहिंसक संघर्ष और अहिंसावादी आज़ाद देश की तरफ ले जाना चाहते थे। गाँधी जी की विचारधारा को लेकर काम कर रहे चिन्हारी के सदस्यों से मुझे प्रेरणा मिलती है। इससे उत्साहित होकर मैं आज गाँधी जी के 'कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम' या 'निर्माण का कार्य' के बारे में बात करना चाहूँगा। यह लेख गाँधी जी ने 1941 में लिखा और इस विचारधारा से जुड़ी सभी बातें, चर्चायें, धारणायें को वे एक साथ ले कर आयें। इस लेख में गाँधी जी सोचने की कोशिश करते हैं कि इस धरती, देश व गांव में निर्माण का कार्य कैसे किया जा सकता है। मैं दो तरह से निर्माण के कार्य के बारे में बात करना चाहूँगा, इस कार्य की एक प्रणाली से मैं फर्क दिखाना चाहूँगा और दूसरे से जोड़ना चाहूँगा। निर्माण के कार्य में मैं विरोध या विरोधता के साथ थोड़ा फर्क दिखाना चाहूँगा। विरोध से मैं विचार के विरोध की बात कर रहा हूँ|वह विरोध जो मात्र बौद्धिक रूप से किसी कार्य के साथ मतभेद रखता हो और सिर्फ सोच के माध्यम से बदलाव लाना चाहता हो। जो इस प्रकार का विरोध करते हैं वे चाहते हैं कि समाज बदले, मगर वे समाज को बदलने के लिए चाहे तो दिशा दिखाते हैं या उसकी अर्ज़ी देते हैं। जो निर्माण का कार्य करते हैं वे समाज को ध्यान लगा कर देखते हैं, समाज की समस्याओं पर गहराई से चिंतन करते हैं और कभी-कभी उसपर अनुसंधान भी करते हैं। एक वैद्य या डाक्टर की तरह वे देखते हैं कि शरीर में क्या तकलीफ़ है। यह जांच करने के बाद वे इस तकलीफ़ को दूर करने की कोशिश करते हैं, वे मरीज़ को दवाइयाँ देते हैं। यह शोध करने के बाद जो तकलीफ़ को मिटाने, हटाने या उस दशा में सुधार लाने की कोशिश करते हैं उन्हें हम निर्माण के कार्यकर्ता कह सकते हैं। इस भाव से चिन्हारी के सभी सदस्यों को हम निर्माण के कार्यकर्ता कह सकते हैं। तकलीफ़ों को दूर करते-करते कई बार नयी दिक्कतें भी आती हैं जैसे नयी दवा के कुछ दोष भाव होते हैं, उनका हमें ख्याल रखना पड़ता है। गाँधी जी ने ऐसा ही निर्माण का कार्य किया था, और एक बदलते देश का सपना देखा था। यह कार्य उनकी अहिंसा की सोच से जुड़ा है। उनका मानना था कि गांव के निर्माण का रास्ता पूर्ण रूप से अहिंसक ही होना चाहिए। निर्माण के कार्य का एक पथ रबीन्द्रनाथ टैगोर की विचारधाराओं में भी है जिसे वे पुनर्निर्माण कहते थे। इस पथ पर चल पाने के लिए हमें निर्माण और पुनर्निर्माण के बीच का रिश्ता और फर्क समझना होगा। जब टैगोर पुनर्निर्माण कहते हैं तो वे ये बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि गांव में सभी चीज़ें ख़राब नहीं हैं। गांव में कुछ चीज़ें अच्छी हैं जिन्हें हमें संभाल कर रखना चाहिए और कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें बदलने की ज़रूरत हैं। जैसे हमारे शहरों में भी कुछ चीज़ें अच्छी और कुछ ख़राब होती हैं। इसका ये मतलब है कि गांव में हम सभी चीज़ों को पुराना (पहले की चिंताएँ, जीवन प्रणाली, धाराएं आदि) समझ कर नहीं छोड़ सकते, बल्कि उसके ही ऊपर हम गांव के आगे का निर्माण कर पाएंगे। हमारे पूर्वजों की जीवन प्रणाली ही हमारे पुनर्निर्माण की नींव है। गाँधी के 'निर्माण' और टैगोर के पुनर्निर्माण के बीच एक रिश्ता बनाना बहुत ज़रूरी हैं। निर्माण के कार्यक्रम के अंदर ही पुनर्निर्माण का कार्य छुपा है और ऐसा ही पुनर्निर्माण

का कार्य शायद चिन्हारी के सदस्य करने की कोशिश कर रहे हैं। चिन्हारी अपने क्षेत्र के भूत-काल से देसी बीज के ज्ञान और देसी खेती से जुड़े आदिवासी किसान के जीवन को वर्त्तमान में जीवित करने की कोशिश कर रहे हैं। साथ ही वे एक और निर्माण का कार्य कर रहे हैं जिसके बारे में गाँधी जी ने अपनी किताब 'कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम' के अध्याय 6 में लिखा है, जिसका नाम है 'स्वच्छता'। एक नयी बीमारी हमारे देश में छा रही है, शायद ब्रिटिश राज कुछ हद तक इसका ज़िम्मेदार है, जिससे हमारा मस्तिष्क और हमारे हाथों के बीच का रिश्ता टूट गया है, हमारी बुद्धि और हमारे श्रम को जोड़ने वाली कड़ी टूट गयी है। इस अलगाव की वजह से हम बुद्धि को ज़्यादा और श्रम को कम महत्व देने लगे हैं, जिसकी वजह से हम गांव और गांव के जीवन को भूलते जा रहे हैं, उससे दूर होते जा रहे हैं, अपने आप और अपनी सच्चाई से दूर होते जा रहे हैं। इस सब में सबसे भयानक बात यह है कि गांव में रहने वाले गांव को जल्द से जल्द इसे भूल जाना चाहते हैं। हम ये समझ नहीं पा रहे हैं कि गांव व अपने अतीत को भूल कर कोई देश आगे नहीं बढ़ पाया हैं, कोई समाज आगे नहीं बढ़ पाया है। इस बात का यह मतलब नहीं है कि हमारे अतीत में सभी कुछ ठीक था लेकिन हम अपने अतीत (गोंड-यादव-ताम्रकार-आदि समाज), पुराने जीवन यापन की प्रक्रियाओं, हमारे देसी बीज के ज्ञान को भूल कर निर्माण या पुनर्निर्माण का कार्य नहीं कर पाएंगे। गाँधी जी इसी बात को लोगों तक पहुंचाना चाहते थे और अलग-अलग माध्यम से वे ऐसा कर भी रहे थे। आशा है, चिन्हारी की ये पत्रिका भी दूर-दूर तक अपनी बातों को पहुंचा पायेंगे, क्योंकि वे गाँधी जी के सपने को साकार करने की कोशिश कर रहे हैं। वे साथ-साथ स्कूल जाते हैं और साथ ही श्रम भी करते हैं; वे हमारे समाज में पनपे हुए इस बुद्धि और श्रम के विभाजन को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। वे बदले की भावना से बदलाव की भावना में गए, विरोध से पुनर्निर्माण में गए और गांव का ही नहीं जीवन का भी पुनर्निर्माण करने की कोशिश कर रहे। गाँधी जी भी गांव के जीवन को बचाना चाहते थे, और उसी दृष्टिकोण से उन्होंने इस किताब को लिखा था। गाँधी जी ने हमें यह रास्ता दिखाया कि सिर्फ सुधार नहीं हमें गांव और जीवन को सुन्दर बनाना है। मुझे लगता है, चिन्हारी ऐसा ही सुन्दर काम कर रहे हैं और इसीलिए उन्होंने खुद को 'द यंग इंडिया' कहा है। साथ ही मुझे उनकी कोशिशों पर विश्वास है, इसलिए मैं इस पत्रिका के हर प्रकाशन में गाँधी जी की इस किताब से एक अध्याय पे चर्चा करूँगा। इस बार मैंने निर्माण और पुनर्निर्माण, बदला और बदलाव, विरोध और विरोधता के बारे में बात किया। अगली बार मैं चिन्हारी के कार्य को देखते हुए इस किताब के किसी दूसरे भाग में चर्चा में लाऊंगा।

अभिस्वीकृति

यह काम भव्या चित्रांशी, अनुभा सिन्हा, गुरप्रीत, विजेता, आशुतोष कुमार, नीरज कपूर, अर्पित गेंद, प्रतीक, इमरान अमिन, सौरभ, अनूप धर आदि के बिना संभव नहीं हो पता।

हम सभी गांववासियों के भी बहुत आभारी हैं कि उन्होंने ने हमें प्रोत्साहन दिया और हमारे काम को सराहा।

हम ललिता सूर्यवंशी, विजेता और नीरज कुमार के शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने सभी आर्टिकल की टाइपिंग और प्रूफिंग में हमारी मदद की।

आखिर में, हम सुमित वर्मा का बहुत धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने आर्थिक रूप से इस पत्रिका को छापने के लिए हमें सहयोग दिया।

चिन्हारी: द यंग इंडिया

CHINHARI: The Young India

www.chinharitheyoungindia.com

www.cdp.res.in